Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

भारत में सुशासन और चुनौतियाँ

Dr. Laxmi Kumari*

Lecturar, Political Science, Government College, Bahadurgarh, Haryana

सारांश – ***वर्तमान में लोकतान्त्रिक प्रणाली पर आधरित राज्य प्रशासनिक व राजनैतिक कार्यों के अलावा लोक कल्याणकारी कार्य भी करते है। जिसमें सुशासन की धारणा का खास महत्व है। भारत में भी लोक कल्याण के तहत सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय प्रदान करने के अलावा जनता को अन्य कई महत्वपूर्ण सुविधाएँ मुहैया कराने की कौशिश की है। उन्हीं में से एक है सुशासन। सुशासन माने अच्छे शासक को जनता की उम्मीदों पर प्रत्येक स्तर पर खरा उतरे और राजनैतिक व सामाजिक दृष्टि से सबल हो। भारत में भी सुशासन की प्राप्ति के लिए संभावनाएँ बेहतर है। लेकिन चुनौतियाँ भी उतनी ही संख्यां में मौजूद है। प्राचीन काल से ही चली आ रही राम राज्य की अवधारणा से प्रतीत होता है कि ये वर्तमान सुशासन की धारणा का ही पर्याय है। आजकल के राज्य भी पुलिस राज्य की धारणा से आगे बढ़कर सुशासन के लिए उतरदायी सरकार, पारदर्शिता, सामाजिक न्याय, जवाबदेही, भ्रष्टाचार की रोकथाम आदि कदम उठा रही है।***

----------X----------

सुशासन का सामान्य अर्थ है, अच्छा शासन। वह शासन जो जनता की उपेक्षा पर खरा हो सुशासन माना जाता है। कुछ लोग इसे ऐसा लोकतान्त्रिक शासन मानते है जो प्रभावी और कार्य कुशल है। लेकिन विद्वानों का प्रायः मानना है कि शासन पद्वति कोई भी हो, सुशासन का सम्बन्ध जनता को दी जाने वाली संवाओं और उनकी गुणवता से है। किसी भी सामाजिक-राजनीतिक इकाई का इस तरह से कार्य करना की वो वांछित परिणाम प्रदान करे सुशासन है। इसमें राज्य, नगर निगम प्रशासनिक व्यवस्था को ले सकते है। विश्व बैंक सुशासन को उस साम्थय निर्माण और राजनीतिक सता के प्रयोग से सम्बन्धित करता है जो देश के कार्यक्रमों के कुशल और प्रभावी प्रबंधन के लिए जरूरी है।

रिचर्ड जेफरिज के अनुसार "सुशासन ऐसा उदेश्योन्मुख और विकासोन्मुख प्रशासन है जो जनता के जीवन स्तर में सुधार हेतू प्रतिबद्ध है।" विश्व बैंक ने अपने प्रतिवेदन गर्वनेस एण्ड डेवलपमेन्ट (1992) में सुशासन की अवधारणा का प्रतिपादन किया। रिपोर्ट के अनुसार शासन से आशय अपने सता प्रयोग करने के वे तरीके जिससे सामाजि-आर्थिक क्षेत्र में प्रबंधन के बेहतर तरीके को प्रदर्शित कर सके। शासन को सुशासन होने के लिए विश्व बैंक ने तीन कसौटियों का उल्लेख किया है। सता का स्वरूप, सता का प्रयोग के तरीके और सक्षमता।

सुशासन की खोज अति प्राचनीकाल से रही है। पाश्चात्य विचारकों में हाब्स, लाॅक, रूसो, प्लेटो, माक्र्स व राल्स से लेकर भारतीय विचारक कौटिल्य, मनु, शुक्र गाँधी इन सब ने राज्य के प्रबंधन संबंधी सिद्वान्तों द्वारा अपने विचार प्रस्तुत कर अमूल्य योगदान दिया है। प्लेटो का आदर्श राजा का सिद्वान्त व अरस्तू के द्वारा एक तंत्र (तानाशाही) कुछ लोगों का शासन (राजतंत्र) व बहुमत का शासन आदि की व्याख्या करते हुए राजनीतिक संगठनों का वर्गीकरण को सुशासन की अवधारणा से सम्बन्धित मान सकते है।

सुशासन का अभिप्राय क्या है। यह नागरिकों को अच्छे कानून और नीतियों के माध्यम से आर्थिक आजादी शांति और अन्य सुरक्षा उपायों की उपलब्धता कराना। भारत में अच्छा शासन स्वराज्य की परम्परागत अवधारणा का नया नाम है। प्राचीन भारतीय शास्त्रों में राजा और राजधर्म के कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है। श्रीमद् भागवदगीता, यजुर्वेद, मनुस्मृति, महाभारत का शांति पर्व, चाणक्य के अर्थशास्त्र में सुशासन के व्यापक नियमों का वर्णन किया है।

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की अवधारणा पर आधारित लोक कल्याणकारी राज्य की धारणा भी सुशासन की दिशा में एक कदम मान सकते है। सुशासन की अवधारणा को व्यवस्थित एवं प्रभावी तरीके से लाने का श्रेय विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, आर्थिक सहयोग एवं विकास के लिए संगठन (ओ॰ ई॰ सी॰ डी॰) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम यूनेस्को जैसी संस्थाओं को दिया जाता है। 1989 में विश्व बैंक ने सब-सहारा अफ्रीकी देशों के दस्तावेज में विकास

www.ignited.in

कार्यक्रमों के बेहतर प्रबंधन एवं विकाल के लिए और इन्हें सुचारू रूप से चलाने के लिए सुधार का पक्ष रखा गया। जिसे सुशासन की संज्ञा दी गई। विश्व बैंक के भूतपूर्व कोनेबल के अनुसार "यह एक ऐसी लोक सेवा है जो दक्ष है, एक ऐसा न्यायिक तंत्र है जो विश्वसनीय है एवं ऐसा शासन जो जनता के प्रति जवाब देह है।"

सुशासन के तत्व

सुशासन के तत्वों की अगर हम बात करें तो इसमें राजनीतिक उतरदायित्व, बहुपक्षीय भागीदारी, विधि का शासन, मानवाधिकार संरक्षण, प्रशासनिक जवाबदेही, सरकार का जनता के प्रति उतरदायित्व, वैचारिक स्वतंत्रता एवं सूचना का अधिकार प्रशासनिक दक्षता एवं प्रभावशीलता आदि तथ्य शामिल है। 1997 में यू॰ एन॰ डी॰ पी॰ ने सुशासन (U.N.D.P.) राजनीतिक, आर्थिक व प्रशासनिक तीनों क्षेत्रों से सम्बन्धित किया। यूनेस्को ने सुशासन के अन्तगत जवाबदेयिता व पारदर्शिता, समता, लोकतंत्र व भागीदारी को शामिल किया गया। भारत के राजनैतिक प्रशासनिक विमर्श में देखे तो पिछले कुछ समय से सुशासन की धारणा ने सबको आकर्षित किया है। इसमें ना सिर्फ सरकार के तीनों अंग विधानपालिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका बल्कि जनता और विभिन्न नागरिक समूह शामिल है।

कहा जा सकता है कि यह एक नागरिक केन्द्रित अवधारणा है जो जनता की भागीदारी के साथ शासन की कमियों की जवाबदेही तय करती है। भारत में 25 दिसम्बर 2014 को अटल बिहारी जी के 90वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर सुशासन दिवस घोषित किया गया और इस दिन कई कल्याणकारी योजनाओं का शुभारंभ किया गया। आज देश के सामने जो प्रमुख निर्णायक प्रश्न है उनमें अच्छा शासन या गुर्ड गवर्नेस सबसे महत्वपूर्ण है। देश की विशालता उसकी सामाजिक व धार्मिक विविधता परम्पराएँ वैश्विक स्तर पर हो रही घटनाओं का दवाब हमारे सामने कई तरह की चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही है। भारतीय सन्दर्भों में आखिरकार सुशासन का क्या अर्थ है? सुशासन की केन्द्रीय चुनौती है, सामाजिक विकास। 14 अगस्त, 1947 को पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इस चुनौती को इन शब्दों में व्यक्त किया था। "गरीबी, अज्ञानता, रोग और अवसर की असमानता का खत्मा। सुशासन का उदेश्य सामाजिक अवसरों का विस्तार और गरीबी उन्मूलन होना चाहिए।

भारत में सुशासन की चुनौतियाँ

भारत में जनसंख्यां विस्फोट, गरीबी, भ्रष्टाचार व नक्सलवाद की समस्या, अशिक्षा आदि सुशासन की महत्वपूर्ण चुनौतियाँ है।

महिला सशक्तिकरण की समस्या – महिलाओं की कमजोर स्थिति भी सुशान की दिशा में एक चुनौती है। अगर भारत के सन्दर्भ में हम गौर करें तो प्रत्येक क्षेत्र चाहे वो निजी या सरकारी महिलाएं 50 प्रतिशत से भी कम है। अतः सुशासन निश्चित करने के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक है।

हिंसा की बढ़ती घटनाएं - शांति और सुरक्षा सुशासन के लिए जन समुदाय की पहली माँग होती है। हमले, दंगे, आतंकी हमले इस बदलती हानिकारक संस्कृति का परिणाम है। लेकिन जब इन परिस्थितियों से निपटने के लिए सरकार बल प्रयोग करती है एवं नागरिक अधिकारों का राज्य व पुलिस द्वारा उल्लंघन किया जाता है। अतः इन समस्याओं से निपटने के लिए प्रशासनिक सूझ-समझ और व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है।

भ्रष्टाचार - भारत में उच्च स्तर के भ्रष्टाचार को व्यापक रूप में सुशासन में बाधा माना जाता है। शासन की गुणवता में सुधार के लिए पी॰ डी॰ एस॰, छत्भ्डए डछ।त्म्ळए प्रधानमंत्री जन योजना आदि सभी कल्याणकारी योजना है। जो सुशासन के लिए बहुत उपयोगी हैं पर भ्रष्टाचार के कारण इन योजनाओं की क्रियान्वन नहीं हो पा रहा है।

न्याय में देरी - प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार है कि उसे समय पर न्याय मिले। परन्तु साधनों के अभाव व अपने अधिकारों की जानकारी के अभाव में समय पर न्याय नहीं मिल पाता। कई बार अमीर जो है कानूनी व्यवस्था के स्वामियों की वजह से कानून के शिकजें से बच जाते है। भारत के विभिनन न्यायलयों सहित् लगभग 21.3 मिलियन मामले लंबित है। जरूरतमंद को तुरन्त न्याय मिले इसके लिए तदर्थ उपायों की आवश्यकता है।

सुशासन की संभावनाएं इगर तलाश करें तो उसके लिए आवश्यक है शक्तियों का विकेन्द्रीकरण, पादर्शिता जिससे प्रशासनिक जानकारी सही रूप में जनता तक पहुँचे। सूचना का अधिकार इस संबंध में सराहनीय कदम है। प्रशासनिक स्तर पर होने वाले भ्रष्टाचार में इससे काफी मदद मिलती है। शक्तियों का विकेन्द्रीकरण होने से प्रशासन का प्रत्येक क्षेत्र

www.ignited.in

अपनी सीमाओं में रहकर कार्य कर रहा है और निचले स्तर पर पंचायती राज जैसी संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीण स्तर से लेकर ऊपर तक जनता की भागीदारी निश्चित हुई है जो सुशासन में सहायक तत्व है।

न्यायिक सक्रियता - न्यायपालिका द्वारा न्यायिक सक्रियता प्रकट करना व 1980 के दशक में जनहित याचिका आदि के माध्मय से न्याय को जन सामान्य के लिए सुलभ बनाना एक अच्छा कदम है। ई गवर्नेंस सुशासन का एक शक्तिशाली उपकरण है। ई गवर्नेंस योजना सभी सरकारी सेवाओं कसे आम आदमी के लिए उसके इलाके में आम सेवा के माध्यम से सुलभ बनाना डिजिटअ इण्डिया यह एक सपना है कि भारत में प्रत्येक सुदूर क्षेत्र का नागरिक भी इंटरनेट से परिचित होते है। जिससे सभी सरकारी सेवाओं और योजनाओं की जानकारी आनलाइन संचार के माध्यम से जनता तक पहुंचे।

किसी भी लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली के लिए सुशासन या गुड गवर्नेंस की अवधारणा अपने आप में महत्वपूर्ण अवधारणा है। जिस पर खरा उतरने का प्रयास प्रत्येक देश करता है। जवाब देही पारदर्शिता, कानून का शासन, जनता की भागीदारी आदि सभी व्यवस्थाएं शक्ति का केन्द्रीकरण भी सुशासन के लिए बड़ी चुनौती है। निचले स्तर से ऊपर तक विकेन्द्रीकरण की बात करें तो पंचायती राज संस्थाएं सशक्त माध्यम है लेकिन इन संस्थाओं को वितीय निर्भरता व अन्य कार्यों के लिए केन्द्र की तरफ देखना पड़ता है जो सुशासन की दिशा में बड़ी रूकावट है।

राजनीति का अपराधीकरण

राजनीति में व्याप्त अपराध और सांठगांठ भी सुशासन के लिए बड़ी समस्या है इसका राजनेताओं, नीतियों के निर्माण पर व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों का सशक्तिकरण ना होना भी सुशासन के सामने चुनौती है। सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछडें वर्गों को हमेशा हाशिए पर रखा गया है। इनके लिए बेशक कितने संवैधानिक प्रावधान हैं पर शिक्षा आर्थिक, सामाजिक हर क्षेत्र में इसका पिछड़ा-पन दृष्टिगत होता है।

पर्यावरण सुरक्षा व सत्तत विकास

पर्यावरण सुरक्षा भी सुशासन के लिए आवश्यक है। पर्यावरण का दोहन इसकी राह में बड़ी रूकावट है। वैश्वीकरण, बाजार अर्थ व्यवस्था और उदारीकरण की चुनैतियाँ भी सुशासन के लिए बड़ी चुनौतियाँ है।

जो किसी भी प्रणाली के लिए जनता की उम्मीदों पर खरा उतरने और अपनी शासन व्यवस्था में सुधार के लिए आवश्यक है। इसके साथ न्यायिक पहल, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए प्रयास, महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रभावी उपाय व शासन की जवाबदेही ही ऐसे कदम है जो सुशासन का आधार है।

सुशासन की संभावनाएं अगर तलाश करें तो उसके लिए आवश्यक है शक्तियों का विकेन्द्रीकरण, पारदर्शिता। जिससे प्रशासनिक जानकारी सही रूप में जनता तक पहुंचे। सूचना का अधिकार इस संबंध में सराहनीय कदम है। प्रशासनिक सतर पर होने वाले भ्रष्टाचार में इससे काफी मदद मिली है। शक्तियों का विकेन्द्रीकरण होने से प्रशासन का प्रत्येक क्षेत्र अपनी सीमाओं में रह कर कार्य कर रहा है, और निचले स्तर पर पंचायी राज जैसी संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीण स्तर से लेकर ऊपर तक जनता की भागीदारी निश्चित हुई है जो सुशासन में सहायक तत्व है।

न्यायिक सक्रियता न्यायपालिका द्वारा न्यायिक सक्रियता प्रकट करना व 1980 के दशक में जनहित याचिका आदि के माध्यम से न्याय को सामान्य जन के लिए सुलभ बनाना एक अच्छा कदम है। ई-गवर्नेंस सुशासन का एक शक्तिशाली उपकरण है। ई-गवर्नेंस योजना सभी सरकारी सेवाओं को आम आदमी के लिए उसके इलाके में आम सेवा के माध्यम से सुलभ बनाना।

डिजिटल इण्डिया

यह एक सपना है कि भारत में प्रत्येक सुदूर छेत्र का नागरिक भी इन्टरनेट कनेक्टिविटी बढ़ाना। जिससे सभी सरकारी सेवाओं और योजनाओं की जानकारी आनलाइन संचार के माध्यम से जल्द से जल्द जन सामान्य तक पहुंचे।

किसी भी लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली के लिए सुशासन या गुड गवर्नेंस की अवधारणा अपने आप महत्वपूर्ण अवधारणा है जिस पर खरा उतरने का प्रयास प्रत्येक देश करता है। जवाबदेही, पारदर्शिता कानून का शासन, जनता की भागीदारी आदि सभी ऐसी व्यवस्थाएँ जो किसी भी प्रणाली के लिए जनता की उम्मीदों पर खरा उतरने और अपनी शासन व्यवस्था में सुधार के लिए आवश्यक है। इसके साथ-साथ न्यायिक पहल, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए प्रयास, महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रभावी उपाय व शासन की जवाबदेही निश्चय ही ऐसे कदम है। जो सुशासन के प्रमुख आधार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. वल्र्ड बैंक, 1992 गवर्नेंस एवम डवलपमेंट वाशिंगटन, डी॰ सी॰ वल्र्ड बैंक

2. सुनील महावार (2012) भरत में सुशासन और पंचयती राज संस्थाएं, चुनौतियँ और समाधान

3. www.achikhabar.com/2015/4/28-sushashandivas लेख भारत में सुशासन की चुनौतियाँ नयी पहल की जरूरत, बाल्मीकि प्रसाद सिंह।

4. के॰ सी॰ तिवारी, 21वीं शताब्दी के युग में भारत में सुशासन की चुनौतियाँ है।

Corresponding Author

Dr. Laxmi Kumari*

Lecturar, Political Science, Government College, Bahadurgarh, Haryana

laxmisaharan5310@gmail.com